एक समाज सुधारक की 'क्रांतिकारी' पाठशाला : सेवा, संघर्ष और समाज सुधार का सफरनामा

- राजीब कुमार बेज

शोध-सार

प्रस्तुत शोध आलेख का लक्ष्य पांडुरंग सदाशिव साने 'गुरुजी' के राजनीतिक सफर का संक्षिप्त विश्लेषण करना है। 1930 में शिक्षक का पद त्यागकर वे गांधीजी के नेतृत्व में स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े और नमक सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा व भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय भागीदारी के कारण कई बार कारावास भोगा। नासिक जेल में ही उन्होंने श्यामची आई जैसे कालजयी साहित्य की रचना की। साने गुरुजी की राजनीति सत्ता-केंद्रित न होकर समाज-सुधार पर आधारित थी। 1947 में पंढरपुर विठोबा मंदिर में दलित-प्रवेश के लिए आमरण अनशन कर उन्होंने अस्पृश्यता के विरुद्ध निर्णायक संघर्ष किया। किसान-मजदूर आंदोलनों, फैजपुर कांग्रेस अधिवेशन तथा अंतरजातीय विवाह के समर्थन से उन्होंने सामाजिक समता को राजनीतिक एजेंडा बनाया। स्वतंत्रता पश्चात उन्होंने पद न लेकर राष्ट्र सेवा दल व साधना साप्ताहिक के माध्यम से युवाओं में रचनात्मक राष्ट्र-निर्माण की चेतना जगाई। इस प्रकार साने गुरुजी का राजनीतिक सफर गांधीवादी मूल्यों, त्याग, सेवा और सामाजिक न्याय का उदाहरण है, जहाँ राजनीति नैतिकता व लोक-कल्याण का साधन बनी। उनका जीवन "खरा तो एकचि धर्म जगाला प्रेम अर्पावे" के संदेश को चरितार्थ करता है।

मूल शब्द - साहित्य**,** साने गुरुजी, स्वतंत्रता सेनानी, राजनीतिक, समाज, जीवन, सेवा भाव। कांग्रेस

प्रस्तावना

महाराष्ट्र और महाराष्ट्रियों के बारे में ज़्यादा नहीं जानता। मैं जो थोड़ा-बहुत जानता हूँ, वह उन महान स्वतंत्रता सेनानियों और समाज सुधारकों के बारे में है, जिनके बारे में हमने इतिहास की कक्षाओं में पढ़ा था। जब हम शिक्षा में योगदान की बात करते हैं, तो हमें महात्मा फुले, महर्षि करवे, तिलक, गोखले और अगरकर जैसे व्यक्तित्व याद आते हैं। हम सभी महात्मा फुले को भारत में महिला शिक्षा की शुरुआत करने वाले के रूप में जानते हैं। हम ऐसे कई लोगों को जानते हैं, जिन्होंने प्रसिद्ध शिक्षा संस्थान स्थापित किए हैं। नए शैक्षिक दर्शन के बारे में क्या? यहीं पर मैं हाल ही में एक ऐसे व्यक्ति से मिला, जो साने गुरुजी के नाम से मशहूर हैं। वे दूसरों की तरह

लोकप्रिय नहीं हैं, फिर भी वे एक स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्होंने लाखों महाराष्ट्रियों को प्रेरित किया। ज़्यादातर महाराष्ट्रियों ने उनकी किताब श्यामची आई पढ़ी होगी या कम से कम उसके बारे में सुना होगा। वे एक लेखक, स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक और सबसे बढ़कर एक शिक्षाविद् थे। उनका संगठन 'अंतर भारती' और उनका साप्ताहिक 'साधना सप्ताहिक' आज भी समाज सुधार गतिविधियों में लगा हुआ है। इस शोध प्रपत्र में साने गुरुजी के जीवन के सामान्य परिचय के साथ उनकी राजनीतिक सफ़र से संबंधित संक्षेप में कुछ बातें प्रस्तुत किया गया है।

साने गुरुजी

जब हम साने गुरुजी (24 दिसम्बर 1899-11 जून 1950) या पांडुरंग सदाशिव साने का नाम स्मरण करते हैं तो सर्वप्रथम हमारा ध्यान उनके अत्यंत प्रशंसनीय जीवनीपरक उपन्यास 'श्यामची आई' तथा 1953 में इसी नाम से बनी फिल्म के लिए उसके निर्देशक प्रह्लाद केशव अत्रे को मिला प्रथम स्वर्ण पदक राष्ट्रपति पुरस्कार की ओर जाता है।

> *"गुरुजी की माँ का नाम था- यशोदा। बचपन से गुरुजी को अपनी माँ से बेहद प्यार था। 'श्यामची आई' पुस्तक में उन्होंने अपनी माँ के बारे में सारी यादें बताई हैं। माँ द्वारा उनके बाल मन पर जो विविध संस्कार किए गए, उन्हीं से गुरुजी के जीवन ने आकार लिया। सभी के प्रति प्रेम-भाव बरतने का पाठ माँ ने ही गुरुजी को पढ़ाया था। साने गुरुजी का मन बेहद भावनापूर्ण और संस्कार श्रम था । इसी कारण माँ ने संस्कारों के जो बीज उनके मन में बोए थे, वे जल्दी फूले- फले।"*[1]

24 दिसंबर 1899 को जन्मे, जब हम 1930 के दशक की उनकी जीवनी घटनाओं को याद करना और उनका पता लगाना शुरू करते हैं, तो हम उनके विद्रोहों और अविस्मरणीय शमची आई से प्रभावित होते हैं। जिस दिन से वे अपने घर से दूर चले गए, उस दिन से लेकर अपने जीवन के अंत तक वे विद्रोही बने रहे। 1930 के दशक में इंदुपुर आंदोलन में भाग लेने के लिए किसानों और श्रमिकों को सत्याग्रह में भड़काने (प्रेरित करने) के लिए जेल जाने के बाद से उनका जीवन उतार-चढ़ाव भरा रहा, इसके बाद 1930 और 40 के दशक में उनके द्वारा शुरू किए गए और नेतृत्व किए गए कई बड़े किसान और श्रमिक संघर्ष हुए। पंढरपुर के विट्ठल और दलितों की मुक्ति के लिए उनका संघर्ष उनकी ऐतिहासिक जीत थी। हालाँकि सबसे हृदय विदारक घटना 11 जून 1950 को 50 वर्ष की आयु में नींद की गोलियों के अधिक सेवन से उनकी आत्महत्या थी। यह एक विद्रोही और आत्मनिर्भर बौद्धिक और क्रांतिकारी जन शिक्षक, प्रतिभाशाली वक्ता, साहित्यकार और क्रांतिकारी कवि की दुखद कहानी है। उनके जीवन काल में कई महत्वपूर्ण मोड़ आए। वर्ष

1915 में उन्होंने अपने पिता के खिलाफ विद्रोह किया और स्कूल में शामिल होने के लिए अपना घर छोड़ दिया। 1916 में उनकी माँ की मृत्यु हो गई। 1930 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में सत्याग्रह में भाग लेने के लिए उन्हें पहली बार कारावास हुआ जो उनके जीवन की एक नई शुरुआत थी। 1930 के दशक से उनके जीवन का फोकस तीन महत्वपूर्ण लक्ष्य पर था । इसके बारे में आगे चर्चा की गई है...

1. पहला था किसानों, खेतिहरों और मजदूर वर्गों को जागृत करना और उनके दर्द, पीड़ा और शोषण को बड़े पैमाने पर आंदोलन, विरोध मार्च और गीतों के माध्यम से सामने लाना।
2. दूसरा फोकस सामाजिक न्याय की खोज और सामाजिक जागृति और जन शिक्षा के लिए निर्देशित साहित्यिक कार्यों के निर्माण के माध्यम से अपने भावनात्मक जीवन और बौद्धिक आकांक्षाओं को आत्म अभिव्यक्ति प्रदान करना था।
3. तीसरा युवाओं, ट्रेड यूनियनों और किसानों के संगठन बनाने और सामाजिक रूप से 'असहाय' लोगों के लिए उनका समर्पण था। कुल मिलाकर हम उनकी उपलब्धियों को लोकमान्य तिलक के बाद महाराष्ट्र के किसी भी बुद्धिजीवी द्वारा अद्वितीय और अद्वितीय पाते हैं।

साने गुरुजी का राजनीतिक सफर

साने गुरुजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। एक साहित्य प्रेमी, समाजसेवी, बुद्धिजीवी समाज सुधारक एवं प्रखर राजनेता के रूप में उनका व्यक्तित्व का प्रभाव आज भी उतना प्रासंगिक है, जितना तत्कालीन समाज के लिए था। यहां उनके राजनीतिक सफर के बारे में संक्षेप में एक परिचयात्मक अनुशीलन प्रस्तुत किया गया है।

"नवंबर 1928 में उन्होंने 'विद्यार्थी' नामक मासिक पत्रिका चलाई। सन् 1930 में हिंदुस्तान में राजनीतिक आंदोलन की शुरुआत हुई। गुरुजी ने स्कूली जीवन से अपने को मुक्त किया और भारत के राजनीतिक जीवन से समरसता प्राप्त करने के लिए उन्होंने सत्याग्रह में हिस्सा लिया। यहाँ गुरुजी के जीवन का प्रथमार्ध पूरा हुआ और उत्तरार्ध की शुरुआत हुई। सन् 1921 में ही महात्मा गांधी के राजनीतिक आंदोलन का गुरुजी पर असर हो रहा था। सन् 1921 में उन्होंने खादी पहनना शुरू किया। सन् 1930 में सत्याग्रह शुरू हुआ तो उन्होंने स्कूल छोड़ दिया और खानदेश में प्रचारकार्य शुरू किया। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। कारागृह में विनोबा भावे से उनकी मुलाकात हुई। कारागार में बड़ी खुशी के साथ उन्होंने चक्की पीसने का काम स्वीकारा। वहाँ विनोबा जी 'गीता' पर प्रवचन देते। उनके प्रवचन गुरुजी बड़े ध्यान से सुनते। विनोबा के प्रति गुरुजी के मन में श्रद्धा का भाव

पैदा हुआ। 23 मार्च, 1931 को वे रिहा हुए तो फिर से कारागृह जाने के लिए ही। सन् 1932 से 1934 तक वे कारागार में ही थे। सन् 1934 से 1936 तक दो साल वे पुणे में रहे। सन् 1936 में कांग्रेस ने गाँव में अधिवेशन करना तय किया। इसके लिए को चुना गया। उस अधिवेशन को सफलता दिलाने के लिए गुरुजी ने बहुत कष्ट उठाए। उन्हीं के हाथों आजादी की मशाल लाई गई। असेंबली के चुनाव लड़ने का निर्णय कांग्रेस ने उसी अधिवेशन में लिया। पूरे देश अपने साथ लाने के लिए कांग्रेस के कार्यकर्ता जुट गए। इस दौरान गुरुजी ने कांग्रेस का संदेश खानदेश के -गाँव तक पहुँचाने का काम किया।[2]

हालांकि कम्युनिस्टों के साथ उनका जुड़ाव 1942 में समाप्त हो गया, जब उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेने की दृढ़ प्रतिबद्धता जताई, जब भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने ब्रिटिश युद्ध रणनीति का समर्थन किया। उनकी अवज्ञा उनके मानवतावाद से प्रेरित थी। हालांकि कार्ल मार्क्स की वकालत और पूंजीवादी जुए से मेहनतकश जनता की मुक्ति के सिद्धांत ने उन्हें कभी नहीं छोड़ा। उनका जीवन उद्देश्य अन्याय, पूंजीवादी और सामंती शोषण से पीड़ित जनता की भावनात्मक भावनाओं को प्रकाश में लाना और भारत की स्वतंत्रता के बाद उनकी मुक्ति को देखना था। उन्होंने श्रम की गरिमा को बनाए रखा और 1942 के आंदोलन के अपने भूमिगत वर्षों के दौरान सैकड़ों बुलेटिन लिखे। शक्तिशाली वामपंथी झुकाव को शामिल किया गया है। 1930 में उन्हें ब्रिटिश प्राधिकारियों ने पंद्रह महीने से अधिक समय तक धुले जेल में कैद रखा था। पिता-पुत्र का यह संघर्ष उनकी आजीवन यात्रा का मूल है, जो उनकी सोलह वर्ष की आयु से लेकर उनके जीवन के अंत तक दमन के खिलाफ संघर्ष की ओर ले जाता है।

साने के पिता लोकमान्य तिलक के समर्थक थे। हालाँकि कुछ दिनों तक जेल में रहने के बाद उन्होंने राजनीतिक मामलों से दूर रहना पसंद किया। हालाँकि श्याम की माँ का उनके जीवन पर अधिक प्रभाव था। उन्होंने मराठी और संस्कृत में स्नातक की डिग्री प्राप्त की और दर्शनशास्त्र में मास्टर डिग्री हासिल की, फिर उन्होंने शिक्षण पेशे को चुनने का फैसला किया। गुरुजी ने अमलनेर शहर के प्रताप हाई स्कूल में शिक्षक के रूप में काम किया। पिता के प्रति विद्रोह या माँ के प्रति अवज्ञा और प्रेम और स्नेह ने उनके पूरे जीवन काल के लिए मूल और प्रेरक शक्ति का निर्माण किया। पिता-पुत्र टकराव या मास्टर स्लेव द्वंद्ववाद का शास्त्रीय मूल उनके पूरे जीवन में दोहराया गया। इस टकराव की यादें उनके जीवन और उनके पूरे जीवन और उनके व्यक्तित्व की गति की प्रेरक शक्ति बनी रहीं। श्यामाची आई- माँ यशोदाबाई से प्रेरित मानवतावाद लिए मार्गदर्शक शक्ति बन गए। निम्नलिखित कविता में साने गुरुजी मानवता के कई पहलुओं को धर्म के रूप में

परिभाषित करते साने गुरुजी के धर्म की अवधारणा 'मानवतावाद' थी। जो लोक धर्म से प्रेम करते हैं, जो भगवान से प्रेम करते हैं, उन्हें प्रेम से भर जाना चाहिए और सभी को प्रेम प्रदान करना चाहिए। धर्म की उनकी अवधारणा उनकी कविता में संक्षेपित है, 'खरा तो एकची धर्म जगला प्रेम अर्पवे' गीत साने गुरुजी की अपनी माँ की बचपन की यादों से प्रेरित और उभरा था। यही उन्होंने सभी मानव जाति को सिखाया। यह गीत साने गुरुजी द्वारा मई 1934 में रचा गया था जब वे धुले जेल में थे। हृदय को छू लेने वाला यह गीत हिंदू धर्म द्वारा सदियों से चली आ रही सामाजिक धार्मिक असमानता को मिटाने के लिए 'वरकरी संप्रदाय' सहित पूरी आबादी से एक अपील थी। इस गीत के माध्यम से उन्होंने पूरे महाराष्ट्र में आम आदमी और गरीब, शोषित लोगों, किसानों और मजदूरों को संबोधित "मानवतावाद" की अवधारणा फैलाई। उन्होंने अंग्रेजी पाठकों के लाभ के लिए और मानवतावाद के साथ उनके परिचय के लिए उनकी 'कविता गीत' का अनुवाद किया है।

कट्टरपंथी चरण- किसानों और सर्वहारा वर्ग का नेतृत्व

साने गुरुजी की शासक वर्गों के खिलाफ़ अवज्ञा ने राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि प्राप्त की। 1930 के दशक के अंत में, पांडुरंग साने ने जलगांव के कपड़ा क्षेत्र में मजदूर वर्ग के आंदोलन का नेतृत्व किया, जब वे अम्मालनेर में मिल वर्कर्स यूनियन के अध्यक्ष भी थे। 1938 में भारी बारिश के कारण भी फसलें नष्ट हो गईं और किसान दयनीय स्थिति में थे। साने गुरुजी ने किसानों के लिए भूमि राजस्व माफ़ करवाने के लिए पूर्वी खानदेश में कई स्थानों पर सभाएँ और जुलूस आयोजित किए। उन्होंने कलेक्टर के कार्यालय पर मार्च का नेतृत्व किया। इस अवधि के दौरान वे एसएम डांगे जैसे कम्युनिस्टों के साथ जुड़े रहे। 1938 में साने गुरुजी ने किसानों और मजदूर वर्गों को जिलों, राज्यों और राष्ट्र भर में एकजुट करने के लिए क्रांतिकारी गीतों की रचना की।

साने गुरुजी बहुत प्रतिभाशाली कवि थे और उनके गीतों का आम जनता पर इतना शक्तिशाली और गहरा प्रभाव था कि ब्रिटिश सरकार ने उनकी कविताओं और उनके प्रकाशन पर प्रतिबंध लगा दिया। 50 हजार से अधिक किसानों और मजदूरों के आंदोलन का नेतृत्व साने गुरुजी करेंगे। यह निर्णय 28 दिसंबर 1938 को कॉमरेड एस.ए. डांगे, कॉमरेड सरदेसाई, साने गुरुजी और कॉमरेड लालजी पेंडसे की बैठक में सामूहिक रूप से लिया गया था।

किसान जागरण के कारण 23 और 24 जनवरी 1939 को प्रत्येक गांव में सबसे शक्तिशाली किसान प्रदर्शन हुए और जलगांव तक विरोध मार्च निकाला गया। उनकी कविता का अनूदित संस्करण नीचे दिया गया है। साने गुरुजी ने एक और गीत की रचना की.. 26 जनवरी 1939 को जलगांव में हुई बैठक में हजारों मजदूरों और किसानों के जीवन को तबाह करने वाले भयानक 'गीले अकाल'

के खिलाफ हजारों किसानों का विशाल विरोध मार्च शुरू करने का फैसला किया गया। इसी तरह साने गुरुजी ने किसान मोर्चे के लिए एक और गीत भी रचा।

उस गीत ने इतिहास रच दिया। गीत- 'अता उठावु सारे राण' साने गुरुजी द्वारा रचित था और इसे जलगांव जिला प्रमुख के बंगले पर जुलूस और मार्च के दौरान गाया जाना था। अनुवादित संस्करण पूंजीवाद के साथ लड़ाई का नेतृत्व करने के उनके आंतरिक दृढ़ संकल्प को दर्शाता है। उपर्युक्त क्रांतिकारी गीत ने स्वतंत्रता के गान के रूप में राज्य सत्ता को चुनौती दी। खानदेश में, हर गांव में यह गीत गाया गया और इसने 23/24 जनवरी 1939 से ही किसानों और मजदूरों के बीच बहुत ही उच्च स्तर की जागृति और लहरें पैदा कर दीं। कांग्रेस नेताओं ने गीत और साने गुरुजी के खिलाफ कड़ी आलोचना की। अमलनेर स्थित समाचार-पत्र 'कांग्रेस' ने साने गुरुजी की तीखी आलोचना की। यहां तक कि महात्मा गांधी ने भी मार्च का विरोध किया। अहिंसा के नायक साने गुरुजी की 'देश को आग में डालने' की भाषा का उपयोग करने के लिए आलोचना की गई।

'साने गुरुजी की रचना' और स्वतंत्रता के प्रति उनके उत्साह को समझना कोई आश्चर्य की बात नहीं है, सभी उत्पीड़ितों के लिए स्वतंत्रता की प्राप्ति की उनकी अंतरतम इच्छा में पश्चिमी दार्शनिकता भी थी और इसके मूल में उनकी माँ का प्रेम और मानवतावाद की प्रेरणा थी। गीत का अंतिम छंद नीचे पढ़ा जा सकता है।

"अब हम झुकेंगे नहीं, तुम्हारी लात-घूसे सहेंगे नहीं,
किसान-मजदूर अब अडिग रहेंगे"[3]

धर्मनिरपेक्षता के प्रति उनका प्रेम और लगाव तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए उनका दृढ़ संकल्प जगजाहिर है, लेकिन स्वतंत्रता के बारे में उनकी अवधारणा कांग्रेस से बिल्कुल अलग थी। वे समझते थे कि पूंजीवादी शोषण से मुक्ति के लिए मेहनतकश जनता ही जिम्मेदार है और स्वतंत्रता ही उसकी अभिव्यक्ति है। साने गुरुजी का क्रांतिकारी उपन्यास- क्रांति- क्रांति इन पंक्तियों के साथ समाप्त होता है

"सभी देशों में क्रांतियाँ होंगी। दुनिया भर में शोषित सभी लोग एकजुट होंगे। दुनिया की सभी कामकाजी आबादी एकजुट होगी। पूरी दुनिया का एक ही झंडा होगा। शानदार सपना सच्ची दुनिया में मूर्त रूप लेगा। पूरा विश्व परिवार सुखमय जीवन जीएगा। विश्व क्रांति सच्ची शांति और स्थिरता लाएगी।"[4]

समापन पंक्तियाँ सर्वहारा वर्ग द्वारा विश्व क्रांति के कार्ल मार्क्स के सिद्धांत को दोहराती हैं। लिखी गई गीत ने इतिहास रच दिया। गीत- 'अता उठावु सारे राण' साने गुरुजी द्वारा रचित

था और इसे जलगांव जिला प्रमुख के बंगले पर जुलूस और मार्च के दौरान गाया जाना था। अनुवादित संस्करण पूंजीवाद के साथ लड़ाई का नेतृत्व करने के उनके आंतरिक दृढ़ संकल्प को दर्शाता है।

कम्युनिस्ट पार्टी से संबंध विच्छेद

जब हम साने गुरुजी के वैचारिक-दार्शनिक पहलुओं को देखते हैं तो हम साने गुरुजी द्वारा भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी से खुद को अलग करने के एक और विद्रोही फैसले को समझ सकते हैं और उसकी सराहना कर सकते हैं। दूसरे विश्व युद्ध में कम्युनिस्टों द्वारा अपनाए गए समर्थन से साने गुरुजी को नाराजगी हुई और उन्होंने साने गुरुजी को कम्युनिस्टों से नाता तोड़ने के लिए मजबूर कर दिया। यह दर्दनाक था लेकिन वे किसी भी युद्ध के लिए कम्युनिस्टों का समर्थन स्वीकार नहीं कर सकते थे। कम्युनिस्टों के खिलाफ उनकी अवज्ञा अपने आप में बहुत कुछ कहती है। उनका रुख युद्ध विरोधी था। उन्होंने सभी उत्पीड़ितों के लिए संघर्ष करने और सभी उत्पीड़कों के खिलाफ आवाज उठाने के लिए अद्वितीय रुख अपनाया, चाहे उनकी राष्ट्रीयता कुछ भी हो। ऐसे स्वतंत्र रुख वाले किसी व्यक्ति की पहचान करना मुश्किल है। फिर से उनकी माँ के सभी दलितों के प्रति स्नेह ने उन्हें राष्ट्रीयता से परे इस तरह के अद्वितीय-स्वतंत्र रुख को अपनाने का साहस और सहज प्रेरणा प्रदान की। वे मधु लिमये, एनजी गोरे और अन्य समाजवादी सहयोगियों के साथ भूमिगत हो गए और गिरफ्तार कर लिए गए।

जाति प्रथा उन्मूलन के लिए अभियान

पूना समझौते के दौरान महात्मा गांधी ने डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर से वादा किया था कि वे अपना शेष जीवन अस्पृश्यता निवारण के लिए लगाएंगे। पंढरपुर के भगवान विठोबा, जिन्हें शोषितों और दलितों का एकमात्र भगवान माना जाता है, की मुक्ति के लिए शुरू किया गया आंदोलन बाबासाहेब आंबेडकर के पद चिन्हों पर चलने के लिए किया गया था। पंढरपुर के विठ्ठल मंदिर को सबसे रूढ़िवादी हिंदू पुजारियों (जिन्हें बड़वे कहा जाता है) के चंगुल से मुक्त कराना सबसे बेहतरीन उपलब्धियों में से एक था। समझदार गुरुजी को अपना जीवन दांव पर लगाना पड़ा। उनका आमरण अनशन दलितों और दलितों के हाथों से हथकड़ी खोलने के लिए था, जिनका मंदिर में प्रवेश सदियों से वर्जित था। वास्तव में संत चोखा मेला (जन्म १२७३; मृत्यु १३३८) को इन पुजारियों ने प्रवेश की अनुमति नहीं दी थी, जो हमें जाति आधारित व्यवस्था की कड़ी पकड़ प्रदान करता है। 'पंढरपुर के लोगों को पता होना चाहिए कि असली संत कौन है' आचार्य अत्रे!

"पुजारियों ने गर्जना की थी। 'साने, हम तुम्हें सीमा पार भगा देंगे, पर विट्ठल भगवान के द्वार नहीं खोलेंगे' यह पुजारियों का दृढ़, अडिग और निर्मम रुख था। आमरण अनशन के दौरान महान हास्यकार और लेखक, जननेता आचार्य अत्रे अनशन स्थल पर आए और उन्होंने कहा, 'मैं आज पहली बार पंढरपुर आया हूं। मैं आज मंदिर में आपके पांडुरंग को देखने नहीं आया हूं; बल्कि मैं यहां हमारे एक पांडुरंग से मिलने आया हूं जो मंदिर के बाहर बैठे हैं (तालियां)। मैं आपको उपदेश देने नहीं आया हूं। दोपहर में मैं तनपुरे महाराज के मठ में गया और साने गुरुजी के दर्शन किए। नौ दिन के उपवास से उनका शरीर थक गया है। उनकी जीवन शक्ति बहुत क्षीण हो गई है। नहीं। उनका जीवन कैसे बचेगा?-यही प्रश्न अब आपके और हमारे सामने है छाती धड़क रही है और जिगर बड़बड़ा रहा है। मैं एक खुश और मुस्कुराता हुआ व्यक्ति हूं। मैं खुद पर हंसता हूं और दूसरों को हंसाता हूं। लेकिन आज मैं मुस्कुरा नहीं सकता। जब मैंने गुरुजी को देखा और मेरी मुस्कान बंद हो गई। मेरी आंखों से आंसू बहने लगे। पंढरपुर आंदोलन और अनशन को एक और झटका लगा था जब महात्मा गांधी ने अनशन और मार्च का समर्थन नहीं किया था। गांधीजी ने मार्च और आंदोलन करने से साने गुरुजी को रोकने के लिए तार भेजा। गांधीजी के रुख से साने गुरुजी निराश थे। महात्मा गांधी को लिखे अपने पत्र में उन्होंने कहा, "मेरे दृढ़ संकल्प की सच्चाई और पवित्रता संरक्षण की कसौटी पर खरी उतरनी चाहिए। मैं आपकी सलाह का पालन नहीं कर सकता। मुझे क्षमा करें। अब मैंने खुद को पूरी तरह से भगवान विट्ठल को सौंप दिया है।"[6]

जब तक दूसरों के तर्क या निर्णय मुझसे सहमत नहीं होते, मेरे आत्मा देवता, मुझे खुद के प्रति सच्चा रहना चाहिए। आज लोग पुजारी के चंगुल से लड़ने और पंढरपुर के विट्ठल और रखुमाई को आजाद कराने और दबाव में न झुकने के साने गुरुजी के दृढ़ संकल्प और साहसी रुख को सलाम करते हैं। संत नामदेव और चोखोबा ने हिंदू ब्राह्मणों के विशेष संस्कारों की आड़ में अछूतों के प्रवेश को रोकने के खिलाफ़ बड़वे और उत्पातियों के खिलाफ़ आंदोलन शुरू किया था, जो अनुष्ठानों को नियंत्रित करते थे और अछूतों को प्रवेश से रोकते थे। यह पराजय ऐतिहासिक थी और साने गुरुजी के जाति व्यवस्था को उखाड़ फेंकने के दृढ़ संकल्प के कारण ही यह सफल हो सकी। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसमें बापूजी के खिलाफ़ विद्रोह भी शामिल था।

"स्वतंत्रता की सुबह हुई, लेकिन देशवासियों में व्याप्त भेदा भेदभाव दूर नहीं हुए, इसका गुरुजी को बुरा लगता। पंढरपुर का मंदिर अभी हरिजनों के लिए नहीं खुला था।

उन्होंने अपनी ओजस्वी वाणी के साथ प्रचार किया। मंदिर हरिजनों के लिए भी खुले, इसका प्रचार करने के लिए गुरुजी ने छह महीनों तक पूरे महाराष्ट्र की यात्रा की। गुरुजी की छह महीनों की प्रचार - यात्रा से बने जनमत की अनदेखी कर पंढरपुर के विट्ठल मंदिर के पुजारियों ने हरिजनों के लिए मंदिर के कपाट बंद ही रखे। इसलिए गुरुजी ने आमरण अनशन शुरू कर दिया। आगे चलकर दाद साहब मावलंकर के बीच-बचाव से मंदिर के दरवाजे सभी हरिजनों के लिए खुले। सबके लिए पांडुरंग के दर्शन करना संभव हो पाया। भारत भर में कई जगह मारपीट चलती रही और आखिर विभाजन की त्रासदी झेलकर देश आजाद हुआ। देश तो आजाद हुआ।"[6]

यूरोपीय दर्शन के साथ मुलाकात

साने गुरुजी एक शानदार और बेहतरीन साहित्यकार, महान लेखक थे और उन्होंने प्रचुर मात्रा में साहित्य रचा। उनके लेखन में साहित्य के विभिन्न क्षेत्र शामिल थे, जिनमें उपन्यास, लेख, निबंध, कविता, आत्मकथाएँ, अनुवाद, नाटक संवाद आदि शामिल थे। उनके लेखन की लोकप्रियता इसे दर्शाती है। मानवतावाद और सामाजिक क्रांति का प्रचार उनके लेखन का मूल और मौलिक तत्व है। उनके अधिकांश लेखन जेल में रहने के दौरान हुए हैं। कुल 80 पुस्तकों में से 73 को 36 खंडों में पुनर्प्रकाशित किया गया है। उन्होंने तिरुचिरापल्ली जेल में राजनीतिक कैदी के रूप में कारावास की सजा काटते समय तमिल कैदियों के मार्गदर्शन में कुरुल का अनुवाद किया। जेल में, उन्होंने तमिल सीखना शुरू किया।

जिस बात पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, वह है पश्चिमी दर्शन, साहित्य, जीवनियाँ, नाटक और इतिहास के साथ उनका संबंध। इतिहास में महान व्यक्तियों की जीवनियों के उनके अनुवाद लोकप्रिय हैं। उन्होंने डॉ. हेनरी थॉमस की पुस्तक- द ऑटो बायोग्राफी ऑफ बेंजामिन फ्रैंकलिन का अनुवाद किया। वेल ड्यूरेंट द्वारा पश्चिमी दर्शन, 'द स्टोरी ऑफ द ह्यूमन रेस', 1935, हेनरी थॉमस द्वारा और टॉल्स्टॉय के 'व्हाट इज आर्ट?' का अनुवाद काला म्हणजे काय? पश्चिमी साहित्य, इतिहास और दर्शन के साथ उनका संबंध महत्वपूर्ण है और यह उनके बौद्धिक अभिविन्यास को दर्शाता है। इस पर उनका कवरेज आश्चर्यजनक है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में उनका साहित्य श्रमशील, दलित समुदायों के जन जागरण, उन्हें भाईचारे, स्नेह, गर्मजोशी, स्नेह और प्रेम के लिए प्रेरित करने पर केंद्रित है। लोगों को उनकी सरल और हृदयस्पर्शी भाषा पसंद आई। क्रांतिकारी राजनीतिक, सामाजिक और शैक्षिक मुद्दों के बारे में उनके

मन में जो भी विचार और भावनाएं जागृत हुईं, उन्होंने साहित्य के माध्यम से व्यक्त किया। उन्होंने कई सरल घरेलू घटनाओं का हृदय से वर्णन किया है। युवा पीढ़ी के लिए मार्गदर्शन सामग्री, आत्मकथाएँ आदि लिखीं। वयस्कों के लिए लेख और निबंध लिखे, महिलाओं के जीवन को समर्पित और माताओं और बहनों को पत्र लिखे। उनकी पुस्तकें 'श्यामची आई' और 'श्याम' ऐतिहासिक महत्व प्राप्त कर चुकी हैं और लोकप्रिय हैं। उनके साहित्यिक जीवन का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, समाचार पत्रों और पत्रिकाओं की स्थापना और स्थापना। कॉलेज के दिनों में उन्होंने एक लोकप्रिय मराठी साप्ताहिक की स्थापना की और स्वतंत्रता के बाद 15 अगस्त 1948 को सबसे लोकप्रिय प्रगतिशील पत्रिकाओं में से एक साधना की स्थापना की। विरासत और विरासत को साधना द्वारा संरक्षित किया जाता है क्योंकि साने गुरुजी की शिक्षाओं की प्रासंगिकता 1950 के दशक की तुलना में अधिक है। उनके गीतों और कविताओं ने उन्हें दमित, किसानों और मेहनतकश जनता के 'जीवित कवि और गायक' में बदल दिया है।

साने गुरुजी की आत्महत्या किसानों और मेहनतकश जनता के जनांदोलनों के लिए एक घातक झटका थी। महात्मा गांधी की हत्या और पूरे भारत में सांप्रदायिक हिंसा के बाद साने गुरुजी की उम्मीदें निश्चित रूप से टूट गई होंगी। उनकी आत्मा बेचैन हो गई होगी और उदासी और उदासी ने उन्हें घेर लिया होगा। उनके मोहभंग ने आत्महत्या को उनके लिए एकमात्र विकल्प बना दिया और 11 जून 1950 को उन्होंने आत्महत्या कर ली। वे अब इस दुनिया में नहीं हैं, लेकिन उन्हें आम पुरुषों और महिलाओं तथा शोषितों के राष्ट्रीय शिक्षक के रूप में याद किया जाएगा।

संदर्भ सूची

1. श्याम की मां,(2008) साने गुरुजी, पृ-1, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
2. श्याम की मां,(2008) साने गुरुजी, पृ-2, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
3. https://countercurrents.org/2024/01/sane-guruji-a-rebel-by-birth-and-self-reliant-socialist-intellectual/
4. https://kartavyasadhana-in.translate.goog/view-article/sane-guruji-literarture-narhar-kurundkar?_x_tr_sl=auto&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=en-GB&_x_tr_pto=tc
5. https://www-thehindu-com.translate.goog/books/a-reformers-childhood-review-of-shyamchi-aai-by-sane-guruji-trs-shanta-gokhale/article34050510.ece?_x_tr_sl=auto&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=en-GB&_x_tr_pto=tc
6. श्याम की मां,(2008) साने गुरुजी, पृ-2-5, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली

7. https://en-m-wikipedia-org.translate.goog/wiki/Pandurang_Sadashiv_Sane?_x_tr_sl=auto&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=en-GB&_x_tr_pto=tc

राजीब कुमार बेज (शोधार्थी)
हिंदी-विभाग, पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय,पुदुच्चेरी
Gmail: rajeebkumarbej@gmail.com
Mobile Number-8456065033